अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 12 जुलाई, 2015)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए - 10x1=(10)

(a) सम्यक्त्व पराक्रम के 73 सूत्रों में पाँचवाँ सूत्र है -

(क) निदंणया (ख) गरहणया

(ग) आलोयणा (घ) धम्मसद्धा ( )

(b) किससे जीव व्रत के छिद्रों को ढांकता है -

(क) सामायिक (ख) निन्दा

(ग) गरहा (घ) प्रतिक्रमण ( )

(c) वोदाण से जीव किस गुण को प्राप्त करता है -

(क) अक्रियता (ख) अनास्रवपन

(ग) चित्त निरोध (घ) निसंगता ( )

(d) मन की एकाग्रता प्राप्त होती है -

(क) योग सत्य से (ख) मनोगुप्ति से

(ग) वचन गुप्ति से (घ) काम गुप्ति से ( )

(e) त्याग पथ अपनाने पर भी भोगों की ओर रुचि कहलाती है -

(क) प्रयोग क्रिया (ख) कायिकी क्रिया

(ग) समादान क्रिया (घ) दर्शन क्रिया ( )

(f) सातवें गुणस्थान में कितनी उत्तर प्रकृतियों का बन्ध होता है -

(क) 63 (ख) 59/58

(ग) 56 (घ) 67 ( )

(g) कितने पूर्वों तक की सारी रचनाएँ आगम हैं -

(क) 8 (ख) 9

(ग) 12 (घ) 10 ( )

(h) "तित्थं पुण चाउव्वण्णाइण्णे समण संघे" यह वर्णन किस सूत्र में आता है -

(क) उत्तराध्ययन (ख) नन्दी

(ग) भगवती (घ) दशवैकालिक ( )

(i) अपने कार्य की सिद्धि में कर्ता जिसकी ज्यादा सहायता लेता है, उसे क्या कहते हैं-

(क) कर्म (ख) सम्प्रदान

(ग) अपादान (घ) करण ( )

(j) कुल 148 प्रकृतियों में से कितनी प्रकृतियों का उदय नहीं माना गया है -

(क) 20 (ख) 22

(ग) 26 (घ) 24 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) चारित्र सम्पन्नता से जीव शैलेषी भाव को प्राप्त करता है। ( )

(b) काल की प्रतिलेखना से दर्शनावरणीय कर्म का क्षय करता है। ( )

(c) योगों के प्रत्याख्यान से जीव अयोगी भाव को प्राप्त करता है । ( )

(d) लोभ पर विजय पाने से जीव क्षमाभाव को प्राप्त करता है। ( )

(e) शुभ योग को पुण्य का आश्रव कहा गया है। ( )

(f) पहले से तेरहवें गुणस्थान वाली आत्माएँ सकषायी हैं। ( )

(g) तीर्थंकर नामकर्म का बन्ध चौथे से आठवें गुणस्थान के बीच ही होता है। ( )

(h) अवेदी में नौवे से चौदहवें तक गुणस्थान होते हैं। ( )

(i) अमूर्तिपूजक के स्थानकवासी एवं तेरापंथी दो भेद हैं- ( )

(j) अनुयोग द्वार, तत्वार्थ सूत्र में निक्षेप चार प्रकार के बताए गए हैं। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मुझसे जीव पापकर्मों को न करने के लिए उद्यत रहता है। .....

(b) मेरे प्रत्याख्यान से जीव वीतराग भाव को प्राप्त होता है। .....

(c) मेरे प्रत्याख्यान से जीव एकीभाव को प्राप्त करता है। .....

(d) मुझसे जीव सर्वभावों का अभिगम-बोध प्राप्त करता है। .....

(e) मेरे दो भेद हैं- अगारी एवं अनगारी। . .....

(f) मैं क्रोध के आवेश में होने वाली क्रिया हूँ। .....

(g) मैं ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें गुणस्थान में बन्धन का एकमात्र कारण हूँ। .....

(h) मैं वह गुणस्थान हूँ जिसमें काल करने वाला नरक गति में नहीं जाता। .....

(i) मैं ऐसी परम्परा हूँ जो एकान्ततः जिनकल्प का, नग्नत्व का ही विधान मानती हूँ। .....

(j) मेरे चार प्रकार हैं - नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रमशः नहीं दिए गए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए - **10x1 = (10)**

(a)	चउवीसत्थएणं	-	पायच्छित्त विसोहि	.....
(b)	काउस्सग्गेणं	-	अणुस्सुयत्तं	.....
(c)	सुह साएणं	-	दंसण विसोहिं	.....
(d)	उवहिं पच्चक्खाणेणं	-	लाघविय	.....
(e)	सद्भाव पच्चक्खाणेणं	-	अपलिमंथ	.....
(f)	पडिरूवयाए	-	अनियट्टि	.....
(g)	क्रोध एवं मान का उपशमन	-	शौच	.....
(h)	माया एवं लोभ का त्याग	-	क्षान्ति	.....
(i)	मिश्र गुणस्थान में उत्तर प्रकृति की उदीरणा-		104	.....
(j)	अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में उत्तर प्रकृति की उदीरणा	-	100	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक- दो वाक्यों में दीजिए -

(A) निम्न सूत्रों का अर्थ स्पष्ट कीजिए - (कोई पाँच) **5x2=10**

(i) निः शीलव्रतत्वं च सर्वेषाम्।

.....

.....

.....

(ii) विपरीतं शुभस्य।

.....

.....

.....

(iii) असद्भिधानमनृतम्।

.....

.....

.....

(iv) विधिद्रव्य - दातृपात्र - विशेषात्तद्विशेषः।

.....

.....

.....

(v) जीवित-मरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्धनिदानकरणानि।

.....

.....

.....

(vi) अधिकरणं जीवाजीवाः।

.....

.....

.....

(B) निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (कोई दो) **2x2=4**

(i) अप्रतिबद्धता से जीव क्या प्राप्त करता है?

.....

.....

.....

(ii) आहार प्रत्याख्यान से जीव को क्या उपलब्ध होता है?

.....

.....

.....

(iii) श्रोत्रेन्द्रिय के निग्रह से जीव को क्या प्राप्त होता है?

.....

.....

.....

(c) निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (कोई- तीन) 2x3=6

(i) सूक्ष्म संपराय गुणस्थान के अन्त में कितनी प्रकृतियों का बन्ध विच्छेद हो जाता है?

.....

.....

.....

(ii) देशविरति गुणस्थान में कौनसी 17 प्रकृतियों का उदय संभव नहीं है?

.....

.....

.....

(iii) अपूर्वकरण गुणस्थान में कौनसी चार प्रकृतियों की उदीरणा संभव नहीं है?

.....

.....

.....

(iv) क्षीण मोहनीय गुणस्थान के द्विचरम समय में तथा अन्तिम समय में कौनसी प्रकृतियों की सत्ता नहीं रहती ?

.....

.....

.....

(d) निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 2x2=4

(i) दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा में "स्त्री मुक्ति" के संबंध में क्या मान्यता है?

.....

.....

.....

(ii) मुखवस्त्रिका के प्रमुख दो गुण बताइए।

.....

.....

.....

प्र.6- निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में दजिए - 12x3=36

(i) बहुआरम्भ एवं बहुपरिग्रह से क्या तात्पर्य है ?

अथवा

सराग संयम एवं संयमासंयम से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

(ii) तओ ओरालिय- तेय- कम्माइं च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगइ उड़ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता सागारोवउते सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ परिनिव्वाएइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेइ। उक्त सूत्र-पाठ का हिन्दी में भावार्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(iii) अणुप्पेहाए णं आउय - वज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ घणिय-बंधण-बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ।

उक्त सूत्र-पाठ का हिन्दी में भावार्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(iv) विविक्त शय्या से जीव किस गुण को प्राप्त करता है?

.....

.....

.....

.....

(v) भावसत्य से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है?

.....

.....

.....

.....

(vi) धर्मकथा से जीव को क्या प्राप्त होता है?

.....

.....

.....

.....

(vii) अनुप्रेक्षा से जीव को क्या प्राप्त होता है?

अथवा

वाचना से जीव को क्या प्राप्त होता है ?

.....

.....

.....

.....

(viii) सत्ता किसे कहते हैं? इसके भेदों को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ix) तीसरे गुणस्थान में बंध, उदय, उदीरणा एवं सत्ता योग्य मूल एवं उत्तर प्रकृतियों की संख्या लिखिए।

अथवा

उदीरणा के लिए कौनसी तीन बातें होना अनिवार्य हैं?

.....

.....

.....

.....

(x) गिरि शब्द के रूप लिखिए

अथवा

माला शब्द के रूप लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(xi) निम्न का हिन्दी में अनुवाद कीजिए -

(a) विही संसारं रचीअ। (b) साहू झाहीअ। (c) बाला समणाय भोयणं दाहिइ।

.....

.....

.....

(xii) निम्न का प्राकृत में अनुवाद कीजिए -

(a) शत्रु हँसा। (b) वह पढ़ने के लिए रहता है। (c) लड़की चोर से डरती है।

.....

.....

.....